IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

महिला सशक्तिकरणः स्वयं सहायता समूहों की भूमिका

डॉ. ऋचा यादव ,प्राध्यापक, सामाजिक विज्ञान विभाग (समाजशास्त्र),

डॉ.सी.व्ही. रमन् विश्वविद्यालय, करगी रोड़ कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

जसवंत सिंह जांगडे, शोधार्थी , समाजशास्त्र विभाग ,

डॉ. सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय, करगी रोड, कोटा बिलासपुर (छ.ग.)

सार

महिलाएं विश्व की आधी आबादी हैं। समाज में उनकी भूमिका अपरिहार्य है। लेकिन वे अपने मूल अधिकारों से वंचित हैं। घरेलू हिंसा, आर्थिक और शैक्षिक भेदभाव, प्रजनन स्वास्थ्य असमानताएं और हानिकारक पारंपरिक प्रथाएं, समाज में असमानता का सबसे व्यापक और लगातार रूप बनी हुई हैं। इसलिए उन्हें सशक्त बनाने की आवश्यकता महसूस की जाती है। स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) नामक अवधारणा का विकास महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए सरकारों के लिए अंधेरे में आशा की किरण है। इसमें महिलाओं की कई समस्याओं का समाधान करने की क्षमता है जो महिलाओं को अशक्तता के कारण सामना करना पड़ रहा है और वास्तव में उनके जीवन में काफी बदलाव ला सकता है। इस लेख में महिला सशक्तिकरण, इसके आयाम, स्वयं सहायता समूहों की अवधारणा और महिला सशक्तिकरण में उनकी भूमिका को जानने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्दः महिला सशक्तिकरण, स्वयं सहायता समूह, भूमिका, महिला

परिचय

महिला सशक्तिकरण को सरलता से एक ऐसा वातावरण बनाने के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जहाँ महिलाओं को अपने जीवन से संबंधित निर्णय लेने की शक्ति दी जाती है। हालाँकि, महिला सशक्तिकरण की परिभाषा पर व्यापक साहित्य उपलब्ध है। संयुक्त राष्ट्र (2001) सशक्तिकरण को उन प्रक्रियाओं के रूप में परिभाषित करता है जिसके द्वारा महिलाएँ अपने विकल्पों के विस्तार के माध्यम से अपने जीवन पर नियंत्रण और स्वामित्व रखती हैं। विश्व बैंक की सशक्तिकरण और गरीबी निवारण एक स्रोत पुस्तक, सशक्तिकरण को इसके व्यापक अर्थों में "पसंद और कार्रवाई की स्वतंत्रता का विस्तार" के रूप में परिभाषित करती है (नारायण, 2002)। कबीर (1999) महिला सशक्तिकरण को उन प्रक्रियाओं के रूप में संदर्भित करते हैं जिनके द्वारा जिन लोगों को विकल्प चुनने की क्षमता से वंचित किया गया है वे ऐसी क्षमता हासिल करते हैं। महिला सशक्तिकरण विभिन्न स्तरों पर होता है – व्यक्तिगत, घरेलू, समुदाय और सामाजिक। (थेल्मा के, 2002)

महिला सशक्तिकरण – आयाम

कबीर (1999) के अनुसार, सशक्तिकरण को प्रक्रिया या परिणाम के एक पहलू तक सीमित नहीं किया जा सकता। इस प्रकार महिला सशक्तिकरण जीवन के उन सभी क्षेत्रों को शामिल करता है जिसका महिलाओं पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। इसके अलावा, बाहरी लोगों द्वारा माना जाने वाला सशक्तिकरण जरूरी नहीं कि महिलाओं द्वारा सबसे अधिक मूल्यवान हो। (दीप्ति उमाशंकर, 2006) कुछ महिलाएं सशक्तिकरण को अपने पतियों के बराबर अधिकारों का आनंद लेने के रूप में देखती हैं जबकि कुछ इसे पतियों की नजर में अपने मूल्य के रूप में देखती हैं। यह संस्कृतियों में अंतर के कारण है।चेन और महमूद (1995) ने सशक्तिकरण के चार आयाम दिए हैं, यानी भौतिक, संज्ञानात्मक, अवधारणात्मक और संबंधपरक। (दीप्ति उमाशंकर, 2006)

- भौतिक सशक्तिकरण महिलाओं के भौतिक संसाधन आधार के विस्तार के माध्यम से होता
- संज्ञानात्मक सशक्तिकरण महिलाओं की अपनी क्षमताओं और कौशल की मान्यता से होता है, जो अधिक आत्मसम्मान और आत्मविश्वास से संकेतित होता है।

- अवधारणात्मक सशक्तिकरण दूसरों द्वारा उन्हें देखने के तरीके में परिवर्तन के माध्यम से होता है, जो सामाजिक प्रतिष्ठा और मूल्य में वृद्धि से संकेतित होता है।
- संबंधपरक सशक्तिकरण परिवार के भीतर और व्यापक समाज में लिंग संबंधों में परिवर्तन के माध्यम से होता है, जो रिश्तों में असमानता में लिंग कमी से संकेतित होता है। मेयॉक्स (2000) ने भी सशक्तिकरण के चार आयाम दिए हैं, लेकिन उन्हें शक्ति से जोड़ा है। (दीप्ति उमाशंकर, 2006) वे आयाम है।
- भीतर की शक्ति, महिलाओं को बदलाव के लिए अपनी आकांक्षाओं और रणनीतियों को स्पष्ट करने में सक्षम बनाना।
- शक्ति, महिलाओं को आवश्यक कौशल विकसित करने और अपनी आकांक्षाओं को प्राप्त करने के लिए आवश्यक संसाधनों तक पहुँच बनाने में सक्षम बनाना।
- शक्ति के साथ, महिलाओं को अपने सामूहिक हितों की जांच करने और उन्हें व्यक्त करने, संगठित होने, उन्हें प्राप्त करने और परिवर्तन के लिए अन्य महिला और पुरुष संगठनों से जुड़ने में सक्षम बनाना; और
- शक्ति के ऊपर, शक्ति और संसाधनों में अंतर्निहित असमानताओं को बदलना जो महिलाओं की आकांक्षाओं और उन्हें प्राप्त करने की उनकी क्षमता को बाधित करती हैं। ये शक्ति संबंध जीवन के विभिन्न क्षेत्रों (जैसे, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक) और विभिन्न स्तरों (जैसे, व्यक्तिगत, घरेलू, समुदाय, बाजार, संस्थागत) में संचालित होते हैं। महिला सशक्तिकरण के चार आयाम हैं अर्थात व्यक्तिगत, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक। (घड़ोलिया, 2004) एक गलत धारणा है कि महिला सशक्तिकरण सीधे राजनीतिक सशक्तिकरण से जुड़ा हुआ है। हालाँकि, सशक्तिकरण अनिवार्य रूप से केवल राजनीतिक नहीं हैय यह एक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्तिगत, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक आयाम हैं, जिसमें व्यक्तिगत सशक्तिकरण सशक्तिकरण प्रक्रिया का मूल है। वास्तव में आर्थिक सशक्तिकरण के अभाव में राजनीतिक सशक्तिकरण सफल नहीं होगा। जॉन स्नो इंक (जेएसआई) के शोधकर्ताओं ने छह सामान्य क्षेत्रों या डोमेन की पहचान की है जिसमें महिलाओं का सशक्तिकरण हो सकता है। वे हैंः (दीप्ति उमाशंकर, 2006)
  - स्वयं की भावना और भविष्य की दृष्टि, गतिशीलता और दृश्यता
  - आर्थिक सुरक्षा
  - घर के भीतर स्थिति और निर्णय लेने की शक्ति,
  - सार्वजनिक क्षेत्र में प्रभावी ढंग से बातचीत करने की क्षमता
  - गैर–पारिवारिक समूहों में भागीदारी।

ऊपर चर्चा की गई महिला सशक्तिकरण के आयामों की यह सूची प्रभावशाली और दूरगामी है। वास्तव में, कोई यह कह सकता है कि महिला सशक्तिकरण के आयाम हर उस पहलू में मौजूद हैं जो उनके जीवन को प्रभावित कर सकते हैं। स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) – परिभाषा स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) ग्रामीण गरीबों का एक समूह है जो सदस्यों की गरीबी उन्मूलन के लिए स्वयं को एक समूह में संगठित करने के लिए स्वेच्छा से आगे आए हैं। वे नियमित रूप से बचत करने और अपनी बचत को एक साझा कोष में बदलने के लिए सहमत होते हैं जिसे समूह कोष के रूप में जाना जाता है। (मुकेश अरोड़ा, 2012) स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) को गरीब लोगों के एक छोटे से स्वैच्छिक संघ के रूप में भी देखा जा सकता है, अधिमानतः एक ही सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि से। वे स्वयं सहायता और आपसी मदद के माध्यम से अपनी आम समस्याओं को हल करने के उद्देश्य से एक साथ आते हैं। एसएचजी अपने सदस्यों के बीच छोटी बचत को बढ़ावा देता है। बचत को बैंक में रखा जाता है। यह साझा कोष एसएचजी के नाम पर होता है। आमतौर पर एक एसएचजी में सदस्यों की संख्या बीस से अधिक नहीं होती है। (घड़ोलिया, 2004) इसके अलावा, एक स्वयं सहायता समूह को एक ऐसे समूह के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें अपेक्षाकृत समरूप आर्थिक वर्ग (यानी गरीब) से 10–20 सदस्य होते हैं, जो मौजूदा आत्मीयता और आपसी विश्वास के आधार पर खुद चुने जाते हैंय सदस्य नियमित रूप से एक निश्चित समय और स्थान पर मिलते हैं और अपनी बचत को एक आम कोष में जमा करते हैं, जहाँ से वे जरूरत के हिसाब से ऋण लेते हैं।

स्वयं सहायता समूह की अवधारणा

स्वयं सहायता समूह की अवधारणा निम्नलिखित सिद्धांतों पर आधारित हैः (घड़ोलिया, 2004)

- आपसी मदद के साथ स्वयं सहायता गरीबों के सामाजिक–आर्थिक विकास में एक शक्तिशाली साधन हो सकती है;
- भागीदारीपूर्ण वित्तीय सेवा प्रबंधन अधिक उत्तरदायी और कुशल है;
- गरीबों को न केवल ऋण सहायता की आवश्यकता है, बल्कि बचत और अन्य सेवाओं की भी आवश्यकता है;
- गरीब बचत कर सकते हैं और बैंक योग्य हैं तथा स्वयं सहायता समूह ग्राहकों के रूप में हैं, जिसके परिणाम स्वरूप व्यापक पहुंच, कम लेनदेन लागत और बैंकों के लिए बहुत कम जोखिम लागत होती है;
- नियमित आधार पर छोटी बचत का योगदान करके एक साझा कोष का निर्माण;
- काम करने की लचीली लोकतांत्रिक प्रणालीय ;

- ऋण मुख्य रूप से बिना किसी सुरक्षा के और केवल दस्तावेजों के साथ ट्रस्ट पर दिया जाता है;
- ऋण की राशि छोटी, लगातार और कम अवधि के लिए होती है;
- मुख्य रूप से समूह के दबाव के कारण चूक दुर्लभ होती है; और
- गैर–पारंपरिक बचत के लिए समय–समय पर बैठकें। महिला सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका स्वयं सहायता समूहों में महिलाओं की भागीदारी सशक्तिकरण पर उल्लेखनीय प्रभाव डालती है। यह महिलाओं को उनकी अद्वितीय क्षमता को समझने और महसूस करने, स्वतंत्र रूप से सोचने और कार्य करने का साहस विकसित करने, अपनी इच्छा, पीड़ा, अनुभव, बोलने और स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त करने और अपने विशिष्ट विकास और विकास का पता लगाने में मदद करती है। उल्लेखनीय रूप से, लगभग सभी महिलाओं के पास भविष्य के लिए लक्ष्य होते हैं, जो शायद उनकी आत्म–प्रभावकारिता की अधिक भावना और उन्हें साकार करने की उनकी क्षमता में विश्वास से जुड़े होते हैं। (दीप्ति उमाशंकर, 2006) हालाँकि विभिन्न लेखकों ने महिला सशक्तिकरण आयामों के लिए अलग–अलग संख्या और शीर्षक दिए हैं, लेकिन इन सभी आयामों को सरलता के लिए पाँच आयामों में बांटा गया है। वे हैंय आर्थिक (भौतिक), मनोवैज्ञानिक (संज्ञानात्मक), संबंधपरक, सामाजिक और राजनीतिक आयाम। इसके अलावा एसएचजी में भागीदारी से मुख्य रूप से आर्थिक सशक्तिकरण होता है, जिसके परिणाम स्वरूप मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण होता है, जिसके परिणाम स्वरूप फिर से संबंधपरक सशक्तिकरण होता है, प्रत्येक सशक्तिकरण आयाम के उप–आयाम नीचे दिए गए हैं।

❖ आर्थिक (भौतिक) सशक्तिकरणः महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका पर व्यापक शोध करने वाले विद्वानों ने महिलाओं में निम्नलिखित परिवर्तन देखे हैं।

- भौतिक संसाधन आधार का विस्तार (दीप्ति उमाशंकर, 2006)
- बड़ी और छोटी खरीदारी करने की क्षमता (हाशमी एट अल, 1996)
- सूक्ष्म और लघु उद्यम शुरू करने में सक्षम (संजय क्रांति दास,
- परिसंपत्तियों का निर्माण (संजय क्रांति दास, 2012) आदि ।

❖ मनोवैज्ञानिक (संज्ञानात्मक) सशक्तिकरणः महिलाओं के मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका पर विद्वानों के शोध कार्य ने निम्नलिखित परिणाम दिखाए हैं। महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के परिणाम स्वरूप निम्नलिखित आयामों में मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण हुआ हैय साहस में सुधार (घड़ोलिया, 2004)

- स्वयं के प्रति बढ़ती भावना और भविष्य की दृष्टि (दीप्ति उमाशंकर, 2006)
- आत्म–योग्यता (घड़ोलिया, 2004)
- आत्म–सम्मान और आत्मविश्वास (दीप्ति उमाशंकर, 2006)
- आत्म–सम्मान और आत्मविश्वास के कारण अपनी क्षमताओं और कौशल की पहचान (दीप्ति उमाशंकर, 2006)
- अपनी पहचान, क्षमता, ताकत और शक्ति को महसूस करने में सक्षम (दीप्ति उमाशंकर, 2006)
- अपने लक्ष्यों को परिभाषित करने और उन पर कार्य करने की क्षमता (कबीर, 2001) आदि।

❖ संबंधपरक (परिवार और समाज) सशक्तिकरणः महिलाओं के आर्थिक और मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण के परिणाम स्वरूप परिवार के साथ–साथ समाज में भी उनका महत्व बढ़ा है। इस प्रकार, परिवार के साथ–साथ समाज में भी लैंगिक संबंधों में बदलाव आया है। महिलाओं का संबंधपरक सशक्तिकरण निम्नलिखित पहलुओं में पाया गया है।

- परिवार में उनके योगदान के कारण घर के भीतर स्थिति और निर्णय लेने की शक्ति (दीप्ति उमाशंकर, 2006)
- पूरे परिवार के स्वास्थ्य और उत्पादकता में योगदान (मुकेश अरोड़ा, 2012)
- पति/घर/समाज के रवैये में बदलाव (दीप्ति उमाशंकर, 2006)
- परिवार के भीतर और व्यापक समाज में लैंगिक संबंधों में बदलाव (थेल्मा के, 2002)
- परिवार के अन्य सदस्यों के साथ सौदेबाजी की शक्ति में वृद्धि (दीप्ति उमाशंकर, 2006) आदि।

❖ प्रबंधकीय सशक्तिकरणः एसएचजी में महिलाओं की भागीदारी के परिणाम स्वरूप उनकी प्रबंधकीय क्षमताओं के संबंध में निम्नलिखित प्रभाव देखे गए हैं।

- खुद को समूहों में संगठित करने और अपने सामूहिक हितों को तैयार करने में सक्षम (मेयूक्स, 2000)
- समूह प्रबंधन (संजय क्रांति दास, 2012)
- स्वतंत्र रूप से राय संप्रेषित करने में सक्षम (संजय क्रांति दास, 2012)
- सूक्ष्म उद्यम स्थापित करने में सक्षम (संजय क्रांति दास, 2012)
- अपनी आकांक्षाओं को प्राप्त करने के लिए कौशल विकास (संजय क्रांति दास, 2012) आदि।

❖ राजनीतिक सशक्तिकरणः राजनीति में एक कहावत है, षकिसी भी सभ्यता में जिस समुदाय को शासन करने का अवसर नहीं मिलेगा, वह जल्द ही नष्ट हो जाएगाष। महिलाएं भी इससे अछूती नहीं हैं। अगर उन्हें राजनीतिक

रूप से सशक्त नहीं किया गया तो उनके मूल अधिकार खतरे में पड़ जाएंगे। महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका पर गहन शोध करने वाले विद्वानों ने पाया है कि, ष्हालाँकि महिलाओं को राजनीति में शामिल होने में बाधाओं का सामना करना पड़ता है, क्योंकि उनका मानना है कि केवल पुरुष ही राजनीतिक स्क्रीन अभिनेता हैं, यह धारणा कि चुनाव लड़ने के लिए बहुत अधिक धन की आवश्यकता होती है और फिर भी जीत निश्चित नहीं होती है, आदि।

निष्कर्ष

महिलाएँ 21वीं सदी में भी महिलाएं अधिकारहीन हैं। महिलाओं और लड़कियों के साथ भेदभाव जिसमें लिंग आधारित हिंसा, आर्थिक और शैक्षिक भेदभाव, प्रजनन स्वास्थ्य असमानताएं और हानिकारक पारंपरिक प्रथाएं शामिल हैं, समाज में असमानता का सबसे व्यापक और लगातार रूप है। इसके परिणामस्वरूप उनका जीवन तनाव, आत्म–सम्मान में कमी और निर्भरता, आत्म–बोध और भविष्य की दृष्टि आदि से घिरा हुआ है। वे अपने जीवन से संबंधित मुद्दों के संबंध में निर्णय लेने के लिए भी सशक्त नहीं हैं। एसएचजी में महिलाओं की भागीदारी इस परिदृश्य को बदलने की क्षमता रखती है। यह महिलाओं को आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, संबंधपरक, प्रबंधकीय और राजनीतिक जैसे आयामों पर सशक्त बनाती है। इसलिए सशक्तिकरण में एसएचजी की भूमिका सराहनीय है। सामान्य रूप से महिलाएं और विशेष रूप से ग्रामीण महिलाएं जो खुद को सशक्त बनाना चाहती हैं, उन्हें सशक्त होने के लिए एसएचजी से जुड़ना चाहिए। सरकारों को एसएचजी को इस तरह से मजबूत करके इस अवधारणा को और अधिक लोकप्रिय बनाने के प्रयास करने चाहिए जो उनकी महिला नागरिकों की आवश्यकताओं के अनुरूप हो।

संदर्भ

[1] दीप्ति उमाशंकर, 2006रू महिला सशक्तिकरणः एसएचजी में भागीदारी का प्रभाव, http://www-iimb-ernet-in/microfinance/Docs/Students/women%20empower%20Deepti-pdf

[2] जैल वैन डेर हेइज्डेन, 2006ः एसएचजी फेडरेशन के माध्यम से स्थिरता और सशक्तिकरण – पूर्वी उत्तर प्रदेश में एक अध्ययन

[3] एम के घडोलिया, 2004ः एसएचजी के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनानाः दूरस्थ शिक्षा की भूमिका, ओपन लर्निंग पर तीसरे पैन–कॉमनवेल्थ फोरम में प्रस्तुत पेपर, डुनेडिन, न्यूजीलैंड, जुलाई 2004

[4] मुकेश अरोड़ा, 2012ः महिला सशक्तिकरण में एसएचजी की बढ़ती भूमिका, अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान विश्लेषण और मूल्यांकन पत्रिका, खंड 3, अंक 28, पृष्ठ 98–99

[5] संजय क्रांति दास, 2012ः एसएचजी और बैंक लिंकेज कार्यक्रम के माध्यम से महिलाओं का सामाजिक आर्थिक सशक्तिकरण। विकास के लिए वरदानः अंतर्राष्ट्रीय प्रबंधन और व्यवसाय अध्ययन पत्रिका, खंड 2, अंक – 1, जनवरी – मार्च 2012

[6] महिलाओं के लिए पैगंबर मोहम्मद के कुछ उद्धरण http://www-somaliaonline-com/community/showthread-php/1018&SOME&OF&THE&PROPHETMOHAMED&QUOTES&FOR&WOMEN---

[7] थेल्मा के, 2002ः स्व–सहायता माइक्रो क्रेडिट कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनानाय एशिया और प्रशांत के लिए आर्थिक और सामाजिक आयोग का एशिया–प्रशांत परिप्रेक्ष्य पर बुलेटिन 2002ध्03, शीर्षक एशिया–प्रशांत अर्थव्यवस्थाएँः अनिश्चितताओं के बीच विकास को बनाए रखना, पृष्ठ 69 –78य http://www-unescap-org/pdd/publications/bulletin2002/ch6-pdf